

भगत नामदेव – सबद ५९

मन की बिरथा मनु ही जानै कै बूझल आगै कहीऐ ॥

रागु प्रभाती, भगत नामदेव, गुरु ग्रंथ साहिब, १३५०

मन की बिरथा मनु ही जानै कै बूझल आगै कहीऐ ॥

अंतरजामी रामु रवाँई मै डरु कैसे चहीऐ ॥ १ ॥

बेधीअले गोपाल गुोसाई ॥

मेरा प्रभु रविआ सरबे ठाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥

मानै हाटु मानै पाटु मानै है पासारी ॥

मानै बासै नाना भेदी भरमतु है संसारी ॥ २ ॥

गुरु कै सबदि एहु मनु राता दुबिधा सहजि समाणी ॥

सभो हुकमु हुकमु है आपे निरभउ समतु बीचारी ॥ ३ ॥

जो जन जानि भजहि पुरखोतमु ता ची अबिगतु बाणी ॥

नामा कहै जगजीवनु पाइआ हिरदै अलख बिडाणी ॥ ४ ॥ १ ॥

सार: अज्ञानता में मन अकसर विविधता को अलगाव समझ लेता है, अंतर को टकराव के रूप में देखता है और इससे जीवन बिखरा-बिखरा सा लगने लगता है। यह सीमित नज़रिया अलग-अलग रूपों के बीच छिपी एकता को नहीं देख पाता जिससे यह भ्रम पैदा होता है कि अस्तित्व के अलग-अलग हिस्से, अकेले पृथक हैं। बाहरी दिखावे और गहन मान्यताओं के असर में आकर हम तुलना और फ़ैसला सुनाने के चक्र में फँस जाते हैं। जैसे-जैसे हमारी चेतना बढ़ती है, हमें एहसास होता है कि विविधता का मतलब दो अलग-अलग चीज़ें होना नहीं है, यह एक ही सच्चाई के अनगिनत रूपों को दिखाती है। इस दृष्टिकोण को अपनाने से हम बिखराव से निकलकर स्पष्टता की ओर बढ़ते हैं और यह समझ सकते हैं कि अंतर, एकता की सुंदरता को और बढ़ाते हैं।

मन की बिरथा मनु ही जानै कै बूझल आगै कहीऐ ॥

मन की गहन आंतरिक स्थिति को या तो मन स्वयं ही जानता है या फिर उसे किसी ऐसे व्यक्ति के साथ साँझा किया जा सकता है जो इसे समझता हो। इससे पता चलता है कि मनोवैज्ञानिक गहराई और आंतरिक संघर्ष बहुत निजी अनुभव हैं जिन्हें केवल आत्म-जागरूकता के माध्यम से ही समझा और निर्देशित किया जा सकता है।

अंतरजामी रामु रवाँई मै डरु कैसे चहीऐ ॥ १॥

सर्वज्ञ और सर्वव्यापी चेतना सदैव उपस्थित है तो फिर मुझे किसी बात का डर क्यों होना चाहिए। यह उन अस्तित्व संबंधी संदेह के मिटने को दर्शाता है जो असुरक्षा पैदा करते हैं, विशेषकर तब जब कोई सार्वभौमिक चेतना के साथ अपने अटूट संबंध को पहचान लेता है। (१)

बेधीअले गोपाल गुोसाई ॥

मैं उस सर्वव्यापी शक्ति के अहसास से ओत-प्रोत हूँ। यह गहरी समझ के प्रभाव का वर्णन करता है, जहाँ चेतना अंतरात्मा में बस जाती है।

मेरा प्रभु रविआ सरबे ठाई ॥ १॥ रहाउ ॥

मेरा सर्वव्यापी स्रोत हर जगह मौजूद है। यह उस अद्वैत दृष्टिकोण की पुष्टि करता है कि एक ही ऊर्जा हर जगह विद्यमान है जिससे अलगाव का भ्रम दूर होता है। (१)(विराम)

मानै हाटु मानै पाटु मानै है पासारी ॥

यह मानता है कि दुनिया एक बाज़ार है जो भौतिक संपत्ति जमा करने और बहुत से संसाधन इकट्ठा करने में विश्वास रखता है। यह दिखाता है कि जो दुनिया हमें दिखती है और उसके लेन-देन, सब हमारे मन की उपज हैं, हमारी वास्तविकता मन ही बनाता है।

मानै बासै नाना भेदी भरमतु है संसारी ॥२॥

सांसारिक मनुष्य भ्रम में भटकता रहता है और वह असंख्य भेदों और विभाजनों को सत्य मानता है। यह अनजान मन की बिखरी प्रकृति की ओर इशारा करता है जो विविधता को द्वैत समझ लेता है और इस कारण भ्रम तथा दिशाहीन धारणाओं में उलझ जाता है।

गुर कै सबदि एहु मनु राता दुबिधा सहजि समाणी ॥

जब ज्ञान की बातें मन में बस जाती हैं तब संदेह सहजता से दूर हो जाते हैं। यह उस बदलाव को बताता है जिसमें गहरी समझ को अपनाने से स्वयं और दूसरे के बीच का टकराव समाप्त हो जाता है और मन स्वाभाविक रूप से एकत्व में विलीन होने लगता है।

सभो हुकमु हुकमु है आपे निरभउ समतु बीचारी ॥३॥

सब कुछ प्राकृतिक व्यवस्था के अनुसार स्वाभाविक क्रम में घटित होता है और यही सार्वभौमिक नियम है, इस समानता को पहचानने से निर्भयता उत्पन्न होती है। यह समभाव की ओर संकेत करता है जिसमें कारण और परिणाम को स्वयं तथा ब्रह्मांड के भीतर चलने वाली एक ही निरंतर प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है। इससे अज्ञात का भी डर शांत हो जाता है। (३)

जो जन जानि भजहि पुरखोतमु ता ची अबिगतु बाणी ॥

जो लोग पुरुषोत्तम अर्थात् परम सर्वव्यापक सत्ता को समझते और उनपर चिंतन करते हैं, वह उस अदृश्य वास्तविकता को व्यक्त करते हैं। इसका अर्थ है कि उनका अनुभव-जनित बोध गहन सत्य से आता है और उनके शब्दों में अनुभव से प्राप्त ज्ञान का वज़न होता है। (४)(१)

नामा कहै जगजीवनु पाइआ हिरदै अलख बिडाणी ॥४॥१॥

नामदेव कहते हैं कि उन्होंने उस सत्ता को पा लिया है जो अदृश्य, अद्भुत चमत्कार, हृदय के भीतर समस्त अस्तित्व को बनाए रखती है। खोज यह है कि ब्रह्मांड को बनाए रखने वाली जीवन-शक्ति बाहरी रूपों में नहीं बल्कि व्यक्ति के आंतरिक केंद्र में स्थित है।

तत्त्व: भगत नामदेव बताते हैं कि असल समझ उन अनुभवों से आती है जो सच्चाई की कसौटी पर खरे उतरते हैं, न कि बिना जाँचे-परखे विश्वासों से। उनकी वाणी इसलिए प्रामाणिक है क्योंकि वह केवल अमूर्त विचारों को नहीं बल्कि रूपांतरित जीवन को दर्शाती है। प्रत्येक अनुभव ऐसे विशिष्ट बोध को जन्म देता है जिसे किसी और से उधार नहीं लिया जा सकता। इस तरह, अनुभव से मिली सीख जीवंत सत्य में बदल जाती है और अस्तित्व के मूल तत्व के साथ सामंजस्य स्थापित करती है।

सबद व्याख्या विनइंदर कौर और अमरदीप सिंह

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com